हिमाचल प्रदेश में आलू की फसल में पिछेता झुलसा बीमारी के प्रबंधन हेतु सलाह

मौसम की अनुकूलता के आधार पर हिमाचल प्रदेश के ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में आलू की फसल में पिछेता झुलसा बीमारी निकट भविष्य में आने की संभावना है । अतः किसान भाइयों से अनुरोध है की निम्नवत बिन्दुओं पर अमल करके अपनी फसल को इस बीमारी से बचाएं ।

1. जिन किसान भाइयों ने आलू की फसल में अभी तक फफूंदनाशक दवा का छिड़काव नहीं किया है और जिनकी आलू की फसल में अभी पिछेता झुलसा बीमारी प्रकट नहीं हुई है, उन सभी किसान भाइयों को यह सलाह दी जाती है कि वो मेंकोजेब/प्रोपीनेब/कलोरोथेलोनील दवा का 0.2-0.25 प्रतिशत की दर से (2.0-2.50 किलोग्राम दवा प्रति 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर) छिड़काव तुरंत करें ।
2. जिन खेतों में बीमारी प्रकट हो चुकी है उनमें साइमोक्सेनिल+मेंकोजेब या फिनेमिडोन+मेंकोजेब या डाइमेथोमार्फ+मेंकोजेब दवा का 3.0 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर (1000 लीटर पानी) की दर से छिड़काव करें ।
3. फफूंदनाशक का छिड़काव दस दिन के अंतराल पर दोहराया जा सकता है। लेकिन बीमारी की तीव्रता के आधार पर इस अंतराल को घटाया या बढ़ाया जा सकता है। किसान भाइयों को इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि एक ही फफूंदनाशक का बार-बार छिड़काव न करें । इस बात का भी ध्यान रखें कि फफूंदनाशक दवा के साथ स्टिकर (1 मि. ली. प्रति लिटर) का इस्तेमाल अवश्य करें।